रामविलास साहु

कर्म बिनु जग सुन्ना

(दोसर कविता/ टनका संग्रह)

रामविलास साहु
कविता

कर्म बिनु जग सुन्ना

सूर्ज बिनु अकास सुन्ना
बिजुरी बिनु वादल सुन्ना
जीव बिनु धरती सुन्ना
कोयल बिनु वगिया सुन्ना
फूल बिनु फुलवारी सुन्ना
शेर बिनु वन सुन्ना
नयन बिनु जग सुन्ना
प्राण बिनु देह सुन्ना
प्राजा बिनु राज्य सुन्ना
सत्य बिनु न्याय सुन्ना
वाद्य बिनु संगीत सुन्ना
नारी बिनु समाज सुन्ना
दूध बिनु भोजन सुन्ना
पानि बिनु नदी सुन्ना
देव बिनु मंदिर सुन्ना
दया बिनु धर्म सुन्ना
प्रेम बिनु भक्ति सुन्ना
कर्म बिनु जग सुन्ना।

रौदी

माथपर हाथ धेने
खेतिहरक आँखिसँ गिरलै नोर
धरती सुखलै धान जरलै
खेतमे फटलै दरारि
सुखले साउन-भादौ बितलै
खेतिहरक नसीब फुटलै
खेतसँ उड़ै छै धूल
जरैत खेत देखि दिल जरैत
जरि गेलै सबहक तकदीर
की खेबै अपना
की खेतै धिया-पुता
सोगसँ घटलै शरीर
पूर्वा-पच्छिया फोंक गेलै
सभ नक्षत्र बनलै ठक
ॠतु बदललै मौसम बदललै
धतरीक दरारि फटले रहलै
पानि बिनु सभ जीब
तेजै छै नित्य परान
रौदी-दाही बहुते देखलौं
एहेन जुलुम कहियो नै देखलौं
अछैतै ओरूदे गेलै परान
ई मुसिबत के हरि लेतै
जखन भगवान, सरकार
दुनू बेमुख बनल छै
खेतिहारक दुख के पतिएतै
मांगै छै पानि तँ
डीजलक अनुदान भैटै छै।

सिम्मर केर फूल

लाल-लाल सिम्मर-फूल
देखि सुग्गा ललचाइ
फूल रंग भोगार भेल
सुगा गेल लुभाइ
अपन उद्देश्य बिसरि
सिम्मरकेँ सोइरी लेलक बनाइ
सोइरी सेबैत-सेबैत सुग्गाकेँ
चिल्का गेल हेराइ
फूलसँ फलसँ बनैत धरि
सुग्गा रहल उपास
फल एहेन ललिचगर
लोल मारिते उड़ि जाए
सुग्गाक उपास नै टुटल
पारनमे की खाएत
आश लगौने सुग्गा
सिम्मरपर भेल िनरास
लोभमे फँसि सुग्गा
अपने कर्मपर पचताए
शोगाएल सुग्गा बाजल
रूप रंग देखि नै लोभाउ
रूपक माया जाल फँसि
भुखले तेजब प्राण।

ओलंपिक

बच्चासँ बूढ़ भेलौं
बड़-बड़ खेल देखैत रहलौं
पैंसठ बरख आजादियोक भेल
मुदा पूर्ण आजादी
कहियो ने देखलौं
आइ धरि सरकारक कठखेलमे
ओलंपिक खेल शुरू भेल
जनताक विकेट गिर गेल
देसक रूपैया खेल-खेलमे
मूड़ि-सूधि सभ सधि गेल
सभ शहरमे स्टेडियम बनि गेल
गाममे बेरोजगारी बढ़ि गेल
आजाद देशमे के आजाद भेल
आजादीक झंडा फहरौने
की ओलंपिक तगमासँ
गरीबी-बेरोजगारी मिट गेल
जखन आजाद देशक जनता
अखनो बाटीमे भीख मंगैए
तखन सरकार ओलंपिकमे
अरबो रूपैया किअए लगबैए
एतेक रूपैया खेती-उद्योग
आ रोजगारमे किअए ने लगबैए
जखन देशमे एतेक गरीबी छै
आलंपिककैं की जरूरी छै
जखन देशक आत्मा
गाम-घरमे बसै छै
तँ गाम-वासी किअए
एतेक उपेक्षित छै
जे गामक लोक
नरकमे जीबै-मरै छै
गामवासीक लहु बेचि
सरकार ओलंपिक खेलै छै
ओइसँ गरीबकैं की भेटलै
जखन खोदै छै पहाड़ तँ
मूस भागि जाइ छै।

मेघक बरिआती-

तारबतोर पूरबा बहै
दिन-राति बहै नै थके
गति मन्द पड़िते
गर्मी चढ़ल असमान
उसनियाँ करनाइ शुरू भेल
एहेन अचरज कहियो नै भेल
गर्मी भगबै ले
मेघक बरिआती शुरू भेल
भंडार कोणसँ गरजैत ढनकैत
सेना संगे मेघ धमकि गेल
आगू-आगू अन्हर बिहारि
पाछू संगे शीतल व्यार
ढन-ढन ढमकैत बिजुरी चमकैत
मेघक बरिआती आबए लगल
देखते मेघक बरिआती
गर्मी जान बचा भागए लगल
मेघक बरिआती पछारैत गेल
झम-झम बर्खा बरसि गेल
गर्मीक परकोपसँ छुट्टी भेल
मेघक बरिआती घूमि घर गेल।

पुसक राति

पुसक राति
जाड़क मारल
थरथराइत देह
केना बचाएब प्राण।
फुइसक घर खोपड़ी सन
केना िबताएब पुसक राति
घरक टाट-ठाठ झलफाँसी
कनकनी हवा
छुबैए प्राण
घुराड़ी जरा-जरा
बचबै छी कहुना प्राण
मुदा धिया-पुताक
केना बचतै प्राण।
नार-पुआरक बिछौना
गोनरिक छै ओढ़ना
पजरेमे सटि
बिलाइ दुबकल छै
अबगरहमे छै ओकरो जान
सबहक मुँहेँ सुनै छी
पुसक रातिकेँ फूसि नै बुझियौ
कतेकोकेँ लइ छै प्राण
माघो मास अगुआएले छै
सुनि कऽ करेजा दरकैए
केना भेटत ऐसँ त्राण
आब लगैए नै बचत प्राण
के करत गरीबक कल्याण।

केना कहब भारत महान

जे देशक लेल तियाग करैए
ओकरे जिनगी नरक सन बनल-ए
गरीबक दुख कोइ नै बुझैए
हाथ रहितो नै छै कोनो काम
सूखल खेत नै भेलै धान
जिनगी बितै छै बैसल मचान
तौनी कोपीन पहिर जे रहलै
गाम-समाजकैँ पकड़ि चललै
आफतमे मिल देशकैँ बचैलकै
गोली खा देलकै बलिदान
देश अजाद भैलै मुदा
दिन-दुखियाक दुख कियो ने बटलकै
गरीब बनल छै अखनो गुलाम
सभ धन सरकारे लेल छै
गरीब जनताक हक छिनलकै
आइ धरि नै भेलै गरीबक उत्थान
भुखले पेट तेजै छै प्राण
जे लहू पसिना सभ दिन बहबै छै
आगू बढ़ि सीना तानि
ओकरे दुख नै सरकार बुझलकै
ठेल देलकै नरकमे जानि
मरलकैँ मारैत रहलै
जानि बूझि बिनु लाभ-हानि
देशक समस्या बढ़ैत जाइए
सरकार ओकरा दबबैत जाइए
समस्या बनल अछि ज्वालामुखी समान
केना कहब भारत महान।

जीयब केना

जीयब तँ जीयब केना
दुनियाँ बदलि गेल जेना
चारूकात अधरमे कुकरमे
दिन-दहारे डाका पड़ैए
चौबटियापर इज्जति लुटाइए
गाम-शहरमे दारू बिकाइए
मानव पीब दानव बनैए
चोरी-डाका सिनाजोड़ी करैए
बीच बजार बलत्कारी होइए
कतए चलि गेल धर्मक नीति
जेनए देखियौ कुरितिये रीति
जीयब तँ जीयब केना
दुनियाँ बदलि गेल जेना।

चलैत बाट डर लगैए
चौर सिपाही खेल करैए
सरकारक कानून उन्टा बनलए
निर्दोषी लेल जहल बनलए
दोषी घूमि-घूमि मौज करैए
सरकार अपराधीक बीच
गरीब जनता पीसाइत रहैए
सभ हत्यारा कंश बनलए
सरकार धृष्टराष्ट बनलए
अधिकारी मंत्री माल लुटैए
देशक जनता बौक बनलए
देखि कवि सोचमे पड़लए
जीयब तँ जीयब केना
दुनियाँ बदलि गेल जेना।।

मोनक आगि

पूर्णिमाक चान मलिन भेल
देखि तरेगन कनखी मारए।
सोलह श्रृंगार काएल
भेल मलिन।
पिया बिनु भेलौं विरहिन
रातिक फूल भोरे भेल मलिन।
मृग तृष्णामे मृग बौआइए
भटकि-भटकि जहिना परान गमबैए।
तहिना मन हमर भरमैए
मोन आगि रहि-रहि जड़ैए।
नै पिया पियास मुझाइए
सोलहकलासँ सजल चानकैँ
जहिना अन्हरा नै देखैए
तहिना परदेशिया पिया
अपनाकैँ विरान बुझैए।
िनरदैयाकैँ प्रेम केना जगतै
प्रेम बिनु दुनियाँ केना चलतै।
की चकबा चकबी जकाँ
साँझ पड़ैत बिछुड़ि पड़तै?
पूर्णिमाक चन देखि राति बितेतै
कहैए कवि राखू मोनमे धीरज
एक दिन मेटत अमृतसँ पियास
अपन मोनक आगिकैँ राखू दािब।

मिथिलाक पियास

मिथिलाक पियास
नै मुझा सकल कोइ
जे मुझबैक प्रयासो केलन्हि
ओ सभ दिन ठकिते रहलै
मिथिलाक पियास बढ़ैत गेलै
अपन अश्रुकेँ पीबैत गेलै
पियाससँ मन व्याकुल भेलै
मिथिला तँ मैथिली लेल पियासल
मैथिली-रस पीबए चहै छलै
से रस कड़ुआएले छलै
पियासल मिथिला तड़ैप-तड़ैप
मैथिली लेल मड़ैत रहलै
कहैले मैथिली भाषा
सभ जनक भाषा छी
मुदा सभ दिन अपनेमे झगड़ैत रहलै
एक दोसरसँ छुबाइत रहलै
तँए मैथिलीक विकास नै भेलै
मकड़जालमे फँसल रहलै
तँए आइ धरि नै
मिथिलाक पियास मुझलै
जाधरि मिथिलामे मैथिली
सभ जनक भाषा नै बनतै
ताधरि नै मिथिलाक पियास मुझतै।

किअए छुबाइ छी

छुबैसँ जखन छुबाइ छी
तँए कि परिवर्त्तन देखै छी
काज जखन नै छुबाइए
देहक लहू पानि नै बनैए
नै किनको लकबा मारैए
तँ केना छुबाइ छी?
पानि छुबाइए मुदा दूध नै
पान-मखनसँ मान बढ़ैए
चुड़ा-दहीक भोग लगैए
भात देखि मुदा मन ओकिऐ
भेद-भावक जाल बना
मनुक्खकेँ मनुक्ख नै बुझै छी
समाजकेँ कमजोर केना छी
एतेक धिनौना कुकर्म करै छी
तैयो अपनाकेँ पैघ बुझै छी
गंगा नहाए पूजा करै छी
उन्टे कहै छी छुबाइ छी।

सूखल खेत आ भूखल पेट

सूखल खेत जरैत जजाति
खेतक दाररि देख-देख
दरकि करेजा जरैत रहलै
पानि बिनु खेत बज्जर भेलै
किसानक तकदीर जरलै
की खाए बचैते परान
महगीयो तेतबे छै
पंूजी पतीक हाथे
सरकार विकल छै
छियासठि बर्ख अजादीक भेल
देशक किसान कंगाले अछि
भरल नदी पानि बहति रहलै
नै बनलै बान्ह सुलीस गेट
केना जेतै खेतमे पानि
नै बनलै अखनि धरि नहर
केना उपजतै खेतमे धान
झुट्ठे वयान सरकार करै छै
नै भेलै खेत-विकासक काम
देशक लेल सभ दिन दैत रहलै
किसान अपन खून-परान
मुदा आइ धरि नै
सरकार कहियो देलकै धियान
केना हेतै देशक कल्याण
सूखल खेत भूखल पेट
केना बँचतै गरीबक परान।

के बँचेतौ तोहर जान

चिल्का कनैए दूध पीबैले
देखि दुखित माए कनैत बाजलि-
“सुक्खल देह हड्डीए देखाए
लहूक कतरा दु:खे लेल अछि
स्तनसँ दूधक फेनगीओ ने चलैए
जे तोरा चटा जीएबो
लहू पीब पेट भरतो तँ
पीब ले सभटा हमरा देहसँ।”
चिल्का नोर बहबैत
लगले सूरमे कनैत रहल
अस्सी बर्खक बुढ़िया दादी
ठेंगासँ ठेंगहति लग आबि
पोतासँ बाजली-
“अपना ने तँ गाए-महिंसक दूध अछि
जे पानि फेंटि पीआ दैतिओ
जीवितँए तँ हमरो कमा खिऐबितँए
एक हाथ सेवा सभ दिन करितँए
सबहक असिरवाद पबितँए
भगवानो तँ बेमूख बनल छौ
माए तोहर रोगही-टेटही छौ।”
मुदा,
चिल्का फकसीहारि कटैत रहल
माए ममता भावपूर्ण पुन: बाजलि-
“आन दूध बौआ नयनसँ नै देखलौं
ने जीसँ कहियो सुआद लेलौं
के देतौ दूध जान बँचबैले
नै बँचल छै धरतीपर इंसान
कथी पीआ कऽ तोरा जीएबो
से नइए कोनो इंजाम
माए-बेटा आ बुढ़िया दादी
छी तीनू तीन जान
तीनू मरि संगे जाएब श्मशान
एहेन स्वार्थी दुनियाँकेँ की देखब
जैठाम गरीव जीबै छै कुकुर समान।”

उन्टा साँस छोड़ैत चिल्का जेना
किछु बाजि रहल अछि
भूखक आगिमे छूटि रहल प्राण
नै कोइ अछि दयावान ऐठाम
चहुदिश देखै छी बदलल इंसान
रावण-कंशसँ पैघ शैतान।

आगिए आगि

सगरो लगल छै आगिए आगि
भागि पड़ा केतए जाएब
जेन्नैइ जाइ छी दइए झरकाए
तन जरैए मन जरैए
नैनक नोर सूखि जाइए
जेनए देखै छी आगिए-आगि
केनए भागि जाएब हौ भाय
सगरो लगल छै आगिए आगि।

मनक आगिसँ तन धधकैए
दहेजक आगिसँ समाज जरैए
चिन्ताक आगिमे दुनियाँ जरैए
भ्रष्टक आगिसँ भ्रष्टाचार धधकैए
महगीक आगिमे जनता जरैए
पेट्रोल-गैसमे देश जरैए
केनए भागि जाएब हौ भाय
सगरो लगल छै आगिए-आगि।

के मुझाएत ऐ आगिकैँ
सबहक लहू पानि बनल छै
जिनगी बनल छै जंजाल
झरकि-झरकि सभ मरै छै
के लगेलक ई सगरो आगि
केकरो का◌ेइ नै देखै छै
केनए भागि जाएब हौ भाय
सगरो लगल छै आगिए-आगि।।

दू नजरि

रूप स्वरूप समरूप रहि
सभ मनुख मनुक्खे छी
एक्के लहू समरूप रहि
भेद कुभेद किए करै छी
हीन भावना राखि ताकि
एक-दोसरसँ छुबाइ छी
बात करै छी सर्वहीतक
सबहक दरद किए नै बाँटै छी
अपना स्वर्ग तकै छी
दोसरकैं नरकमे ठेलै छी
सभ एक्के छी तँ दू नजरि किए तकै छी
रूप स्वरूप समरूप रहि
सभ मनुख मनुक्खे छी।

बात बनेलासँ नै बात बनत
कर्म बिना नै जिनगी चलत
अधर्मसँ नै कहियो काज चलत
सत् बिनु नै इंसान बनत
केना कहब के इंसान छी
बेइमानो कहब के शैतान छी
शैतान-बेइमानक बिचबिचौआमे
सभ इंसान ओझराएल छी।
ओझरी-पोटरीमे अँटैक रहि
भितरे-भीतर छुड़ी चलबै छी।
रूप स्वरूप समरूप रहि
सभ मनुख मनुक्खे छी।

राम विलास सहु

टनका

हँसैत फूल
देखि भौंरा कहए
नित्य रहब
दुःख-सुखक संग
सूतब अहीं अंक

बात सुनिते
फूल भेल प्रसन्न
झूला झूलब
पवन संगे-संग
रहब उपवन

रहब वन
पीअब मकरन्द
मधुर रस
डुमल अंग-अंग
सुख-दुःखक संग

स्वर्ग मिथिला
जेहने माटि-पानि
तेहने गाम
खेत-खड़िहाँनमे
भरल धान-पान

अनपढ़कैँ
दी अक्षरक वोध
पोथी पढ़ि कऽ
ज्ञानी बनि ज्ञानकैँ
घर-घर बाँटतै

अज्ञानीकैँ दी
काज करैक ज्ञान
भूखलकैँ दी
दू रोटी भोर-साँझ
बनू नेक इंसान

आँखि मिला कऽ

सभ हाथ मिलबै
दिल मिलबै
नै कोइ, जौं मिलबै
दिलमे जग प्रेम

सभ जातिमे
छोट-छीन झगड़ा
अखनि धरि
जाति-सम्प्रदायमे
बँटल बौआइए

जन कल्याण
समाजक निर्माण
शिक्षाक दान
देशक उत्थानमे
सभक जरूरी छै

धन लगाबी
समाज कल्याणमे
होइत रहै
आगूओ हित काज
बँटैत रहू ज्ञान

दहेज रूपी
दानव पहिने नै
आइ सबल
बेकार चक्करमे
बेचि कऽ लूटाइ छी

भोरक तारा
उगल भुरुकबा
गमकै फूल
भोरु पहर घुमू
रहत चित्त खूश

माटिक घैला
पानि निर्मल करै
सोना नै शुद्ध
मन्दिर मन शुद्ध
ज्ञानी वाणि अमृत

आगि नै मुझै
हवासँ, मुझै दीप

प्यास नै मुझै
भरल सागरसँ
कूप मुझबै प्यास

पढ़ब नै वेद
भेद जानब केना
भूखल पेट
नै सूतब बिछौना
खेत उपजै सोना

मठ मस्जिद
नै मिलै भगवान
वन घुमैत
नै मिलै कोनो देव
मन बसै भगवान

रोगीक रोग
दवासँ छुटैत छै
मन रोग नै
छुटै छै दवाइसँ
प्रेमसँ छुटै रोग

नेत्र दानसँ
जग इजोत होइ
जीवन दान
रक्तदान भूदान
सँ होइए भुदान

सफलताक
करू नीक तैयारी
राति अपन
जागि करू तैयारी
प्रयास राखू जारी

देशक खातिर
करब बलिदान
रक्षा करब
देशक छै कल्याण
काज छै ई महान

स्वर्गक सुख
नै चाही हमरा
दुखसँ मिलै
हरि दर्शन सुख

सभ सुखक खान

मेहनतिसँ
मिलै धन अपार
आलस अछि
दुखक पैघ राह
करू नीक विचार

तीन बातसँ
राखक परहेज
मिठ बोलिया
चटगर भोजन
झूठसँ रहू कात

कन्याँदानसँ
जगमे करू नाम
काम महान
बड़ पैघ छै काम
होइ जग कल्याण

पंचतत्वसँ
बनल छै शरीर
अनमोल छै
ई जिनगीक गाड़ी
अन्त किए होइ छै

धानक बीज
उखाड़ै बोनिहार
गीत गबैत
करै धनरोपनी
सबहक खातिर

बच्चा कनैत
स्कूल जाइ खातिर
जरूरी अछि
कौपी-कलम-पोथी
शिक्षाक छै जरूरी

दूध पीब कऽ
बच्चा पलै बढ़ैए
भविस बनै
उपकारी बनैत
देशक रक्षा करै

माटिक मुर्ति

हिलै-डोलै नै बोलै
श्रद्धा जगाबै
पान-फूल प्रसाद
सँ भक्तकैं मनाबै

मानव तन
खातिर तप करै
छै ऋृषि-मुनी
दर्लभ छै देवोकैं
नै भेटै छै ई तन

हाड़-मासुसँ
बनल छै शरीर
नाश्वर अछि
की भेटै छै तनसँ
मायामे फँसल छै

राजा सेवक
छै जनता मालिक
लोक बुझैत छै
उलटे सेवककैं
अछि राजा मा िलक

गरीब लेल
जेल जुर्माना अछि
नेताक लेल
कालाधन खजाना
जनता छै दिवाला

सभ अपन
नहि कोइ पराया
दुखक साथी
निभाबै जे दोस्ताना
अनमोल खजाना

मोती मालासँ
शोभा बढ़ैत अछि
कंठी मालासँ
हरि भजन होइ
कोन उपयोगी छै

मजदूरक
श्रमसँ बनै टुटै
घर-मकान

मालिक छै महान
श्रमिककैँ नै नाम

चान-सुरूज
अकासमे चमकै
लोक चमकै
छै अपने कर्मसँ
जग इजोत होइ

आगि जरैत
सभ देखैत अछि
दिल जरैत
नै देखैत कोइ
किए अन्तर होइ

पानिक बून
मिलि सागर बनै
सींचै धरती
प्यास मुझै सभकैँ
नै दाम दइ कोइ

मोट रोटीसँ
पेट भरैत अछि
नीक पोथीसँ
ज्ञान बढ़ैत अछि
दुनूकैँ छै मान

जरैत दीप
सभकैँ रोशनी दइ
मुदा अपने
अन्हारेमे रहै छै
उपकार करै छै

सेना देशक
रक्षा करैत मरैत
उपकारी छै
अपन रक्षा नै
देश गर्वीत करैत

चोरक माल
सभ मिलि कऽ खाए
उलटे चाेर
फाँसीपर चढ़ैए
संगे नै कोइ जाइ

नाचए बानर
भात खाए मदारी
बानल कहै
माल अछि केकरो
कमाल करै कोइ

पढ़ल सुगा
बोली छै अनमोल
बन्न पिंजरा
कैद रहि कहै छै
अजादी केना होइ

गाछक फल
सभ खाइ जुराइ
गाछ नै खाए
कहियो आन फल
धर्म पालन करै

धान-पानसँ
मिथिलामे सम्मान
धोती-कुर्तासँ
गौरव पहिचान
स्वागत करै मखान

पकै फसल
कटनी दौनी होइ
कुटि पीस
बनै मधुर भोज
सभकेँ पेट भरै

बिना खेने नै
पेट भरैत अछि
नै देखने
नयन जुराइ छै
नै ज्ञान मुर्ख होइत

प्रेमक राह
जे चलै सुख पाबै
स्वर्ग पाबैत
सफल जीवनक
उत्तम फल पाबै

हरीन देत
सियारक गवाही

दुनू भागि कऽ
जंगल चलि गेल
सजामे प्राण गेल

सौनक साग
भादवक दहीसँ
बँचल रही
आसिन-कातिकक
ओससँ बँचल रही

चंचल मन
चित्त घबराइ छै
जान जोखिम
पैर लड़खड़ाइत
राह नै देखाइ छै

चोर चोर छै
मसिऔत बनल
अधिकारी छै
पिसिऔत बनल
प्रजा साधू किए छै

राधा नचैत
वृन्दावन-गोकुल
कृष्णक बंशी
बजैत मथुरामे
मक्खन चोर कहैत

आमक डारि
झुलुआ झुलै छेलै
कोइली बोली
सुनि गीत गबैत
बौका हँसैत छेलै

बाग-वगिचा
लगबैत सिंचैत
आम-लताम
खाइत जीवैत छेलै
चैनसँ सुतै छेलै

रंगक धार
बहैत छै होलीमे
खूनक धार
बहै छै दुर्गापूजा

दीप सजै दीवाली

मोतीक माला
खरिदै धनवाला
हलुआ-पुड़ी
खाइ छै दिलवाला
दूध बेचै छै ग्वाला

खीरा छै हीरा
भोर पहर खाइ
नूनू लगा कऽ
साँझ पहर खाइ
खीरा तँ होइ पीड़ा

गंगाक पानि
छै अमृत समान
सागर मिलि
बनैए नोनगर
पानि करै छै हा िन

नार-पुआर
घास-पात भूसीकेँ
चिबा-खा गाए
बदलामे दै दूध
पी कऽ जीबै मनुख

देश अजाद
मुदा हम गुलाम
भूखल पेट
केना खुशी मनेबै
स्वतंत्रा दिवस

हमर माए
गंगा सन पवित्र
नौ मास धरि
गर्भ पालन करै
मनक बात बुझै

पुरान अन्न
रोगीकेँ पथ्य पड़ै
पुरान लोक
समाजकेँ बँचाबै
पाबै छै ऊँच स्थान

दुभि घास छै

अमर शुभ
सभ पूजामे
शुभ काज करै छै
सम आँखि देखै छै

सभ महग
कोनो नै अछि सस्त
मुदा देशमे
खून-चून-बेचैनी
अछि सभसँ सस्त

खोजलासँ नै
भेटै छै भगवान
मन मन्दिर
बसै छै भगवान
जे पूजै छै महान

आँखि रहितो
अन्हर बनल छै
केना खोजत
ज्ञानक आँखि मानि
करै जगमे हानि

पानि फलसँ
जिनगी बँचैत छै
बिनु काज नै
आगू चलै जिनगी
रूकिते अन्त होइ

विद्वानक छै
मिथिलामे खान
बढ़बै शान
करै ज्ञानक काम
पबै मान-समान

गरीबकैँ नै
मान अमीर करै
अमीर कहै
से गरीब करै छै
दुखे दुख सहै छै

मोह-मायामे
सभ फँसल अछि
उबरि नहि

सकै जगम कोइ
कर्म अधूरा होइ

धनक चिन्ता
मौतक कारण छी
चीतासँ चीता
चढ़ि भष्म बनि कऽ
माटिमे मिलैत छै

विद्याधन छै
अनमोल रतन
खर्चसँ बढ़ै
नहि छीनै छै राजा
नै चोरबै छै चोर

फूलक मांग
देखैत खेतिहर
फूल लगबै
हाट-बजार बेचि
धन-कमबैत छै

आत्मा अमर
अविनाषी होइ छै
चोला बदलि
रूप रंग देखबै
रहस्य नै जनै छै

आगि जरैत
सभ देखैत अछि
मन जरैत
नहि देखै छै कोइ
बिनु प्रेम नै बुझै

फूलक रक्षा
काँट-पात करै छै
संगे रहै छै
सुखक संग फूल
काँट दुख दइ छै

कोइली बजै
अधरतिया उठि
प्रेमक बोल
प्रेमी छै बिछुड़ल
पिया नै भेल भोर

चिट्ठी-पतरी
केना लिखब पिया
भेजै नहि छी
खबरि ने सनेस
अहाँ छी परदेश

खेलसँ राखू
सभ लोकनि मेल
स्वस्थ्य रहब
तन रहत चुस्त
मन रहत खुश

देशक लेल
खेलब सभ दिन
कठिन खेल
नाओंक लेल नहि
देशक गौरव ले